उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के नवम दीक्षांत समारोह में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

दिनांक 21 अप्रैल,2022

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के इस नवम दीक्षान्त समारोह में, आप सब के बीच पहुंचकर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

दीक्षान्त समारोह, हमारे ऋषि–मुनियों की दी हुई एक अनूठी परंपरा है, जो एक नये उत्साह के साथ, एक नये संकल्प के लिए प्रेरित करती है।

आज के दिन पदक एवं उपाधियां प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों एवं उनके माता–पिता एवं गुरुजनों को बधाई देता हूं जिनकी प्रेरणा, संकल्प एवं समर्पण ने आपकी सफलता का मार्ग दिखाया है। मुझे विश्वास है कि आप सभी अपने जीवन में नित नयी ऊंचाईयों को छूते हुए इस राज्य और अपने विश्वविद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

प्रिय students यह प्रदेश देव भूमि और ज्ञान भूमि के साथ – साथ वीर भूमि भी है, यहां वेद, पुराण और महाभारत जैसे ग्रन्थ लिखे गये थे। ऋषियों–मुनियों ने यहां तप किया था और यहां पर विद्या के अनेक केन्द्र रहे हैं।

उत्तराखण्ड के वीरों की गाथाएं हम सुनते आये हैं, यहां के वीर जवान भारतीय सेना में जाकर मातृभूमि की रक्षा के लिए सदैव तैयार रहते हैं।

देव भूमि को प्रकृति का अनूठा वरदान मिला है। यहां दिव्य औषधियां, फूलों की घाटी, हिमालय के शिखर हैं। यह भूमि इतनी सुन्दर है कि इसे स्वर्ग का मार्ग बताया गया है। इस देव भूमि की आभा सम्पूर्ण विश्व में फैली है।

मुझे अपार खुशी हो रही है कि देवभूमि की संस्कृति और संस्कृत भाषा के रक्षक विद्वान् और युवा यहां उपस्थित हैं।

सदियों पूर्व हमारे ऋषि–मुनि संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे। राज्यों के शासन में भी संस्कृत भाषा का प्रयोग होता था। संस्कृत का अलौकिक ज्ञान, प्रचीन काल से ही देश और दुनिया के लिए रिसर्च का विषय रहा है। दुनिया नें संस्कृत के इस महत्त्व को समझा है।

लेकिन मेरा मानना है कि संस्कृत को इस perception से बाहर निकालना होगा कि यह कठिन भाषा है। संस्कृत को सरल और सुगम बनाने की आवश्यकता है। अंग्रेजों ने इसे कठिन भाषा के रूप में प्रचारित किया था जबकि यह लोगों से जुड़ने की एक फोनेटिक भाषा है।

जर्मनी, फ्रांस, सरिया, बाल्टिक देशों में संस्कृत पर शोध हुए हैं। आज के युग में वैज्ञानिकों, इंजीनियर्स और तकनीकि से जुड़े लोगों को अवश्य ही संस्कृत पढ़नी चाहिए।

संस्कृत में इतनी power है कि आप 7–8 शब्दों को एक ही शब्द में बोल सकते हैं। संस्कृत भाषा का digitalization किया जाना होगा। Artificial Intelligence, Social Media के साथ संस्कृत भाषा को जोड़ना है।

आज का नया भारत संस्कृत भाषा और सांस्कृतिक विरासत के महत्त्व को समझ रहा है। भारत में नयी शिक्षा नीति ज्ञानवान् और शक्ति सम्पन्न नये भारत की आधारशिला रखने वाली है। यह नयी शिक्षा नीति हमें हमारी जड़ों से जोड़ने की राह दिखाने वाली है। हमारे पूर्वजों ने हजारों वर्ष पूर्व जो ज्ञान अर्जित किया था, उस ज्ञान को आत्मसात् कराने वाली है। नयी शिक्षा नीति में हमारे अतीत और संस्कृत भाषा के प्रति सम्मान की भावना निहित है।

हमारे प्राचीन वैज्ञानिकों, महान् आचार्यों के विचार संस्कृत भाषा में सुरक्षित हैं। संस्कृत भाषा की जानकारी होने से ही हम ज्ञान की प्राचीन विद्याओं से परिचित हो सकते हैं।

संस्कृत की इस महत्ता को देखते हुए राज्य में संस्कृत को द्वितीय राजभाषा बनाया गया है, इस भाषा को लोक व्यवहार

की भाषा बनाने के लिए आप जैसे युवाओं को आगे आना होगा। इसके लिए सरल, सुबोध और सरस संस्कृत शब्दावली को दैनिक जीवनचर्या का हिस्सा बनाना होगा।

कोई भी भाषा तभी उन्नति करती है, जब उसका दैनिक व्यहार में प्रयोग होता है। आप संस्कृत भाषा को लोक जागरण की भाषा बनाएं। संस्कृत के माध्यम से समाज में परिवर्तन की नयी कहानी लिखें। समाज में नया नेतृत्व करें। समाज को मानवता के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाने के लिए कार्य करें। समाज को नयी दिशा प्रदान करें। समाज को जीवन जीने की कला सिखाएं। विश्वगुरू के स्वप्न को साकार करने के लिए आप सभी को अपनी–अपनी भूमिका तय करनी होगीं।

स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ जैसे विचारकों ने दुनियां को नयी राह दिखायी थी। आचार्य शंकर ने भारत की एकता के लिए कार्य किया था। महर्षि वाल्मीकि ने समाज की नीव मजबूत करने के लिए रामायण की रचना की थी। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर संस्कृत भाषा को देश की राजभाषा बनाने का प्रस्ताव लाए थे, इन्ही प्रेरक भावों से संस्कृत विद्या और शिक्षा को आगे बढ़ाना होगा।

दुनिया में भारत की पहचान ज्ञान के आधार पर है। आज भारतीय संस्कृति, ज्ञान और विद्या के बल पर दुनिया में भारतीयों को एक अलग सम्मान की नजर से देखा जाता है।

हमने दुनिया को एक परिवार माना है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे विचार दुनिया को एक राह दिखाने वाले हैं।

योग और संस्कृत आज के समाज की आवश्यकता बन गयी है। इनकी वैश्विक मांग बढ रही है।

आज हम तकनीकी के युग में जी रहे हैं, इस तकनीक का उपयोग भारतीय चिन्तन के प्रसार और मानवमात्र के कल्याण के लिए करना होगा।

संस्कृत भाषा को आधुनिक विषयों से समन्वय स्थापित करते हुए विज्ञान, तकनीकी, मीडिया, राजनीति, इतिहास आदि विषयों के साथ जोड़ना होगा।

मेरा परामर्श है कि योग और संस्कृत की मांग को पूरा करने के लिए तकनीकी को उपयोग में लाते हुए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए यह विश्वविद्यालय दीर्घकालीन योजना पर कार्य करे।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि, यह संस्कृत विश्वविद्यालय इन्ही लक्ष्यों को लेकर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास, पर्यावरण संरक्षण, के साथ ही संस्कृत भाषा को सीखने–सिखाने की दिशा में भी अपनी सामानजिक जिम्मेदारी तय करें।

विश्वविद्यालय विविध परियोजनाओं, पाठ्यक्रमों, कम्युनिटी रेडियो आदि नवाचारों में संस्कृत की शब्द सम्पदा को समाज तक पहुंचाने की दिशा में भी अवश्य चिन्तन करें।

मैं अपेक्षा करूंगा कि, अधिक से अधिक, हमारी बेटियां भी संस्कृत, योग और अन्य शास्त्रों को सीखने और सिखाने में योगदान करें। आज स्त्रियाँ हर क्षेत्र में आगे आकर अपने कौशल व प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं जो अत्यन्त ही शुभ संकेत है।

मुझे खुशी है कि विश्वविद्यालय में खेल गतिविधियां, पुस्तकालय, छात्रावास, शोधपूर्ण प्रकाशन आदि कार्यों में साधन संपन्न हो रहा है ।

इस सुन्दर आयोजन के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति, कुल सचिव एवं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी आचार्यों की प्रशंसा करता हूँ और उन्हे हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

इस समारोह की शोभा बढाने वाले यहाँ उपस्थित सभी महानुभावों को भी एक बार पुनः हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

जय हिन्द